मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 4

MHD–1

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)

(एम. एच. डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2025

एम.एच.डी.–1 : हिन्दी काव्य–1 (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *(i)* *कुल* **चार** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

(ii) ***प्रथम*** *प्रश्न अनिवार्य है।*

(iii) *शेष में से किन्हीं* ***तीन*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) ठाकुर ठक भए गेल चोर सरपरि घर सज्जिय।
दासे गोसाउनि गहिअ धम्म गए धंध निमज्जिअ।।
खले सज्जन परिभविअ कोइ नहि होइ विचारक।
जाति अजाति विवाह अधम उत्तम कौ पारक।।

(ख) एक अचंभौ देखा रे भाई।
ठाढ़ा सिंघ चरावै गाई।। टेक।।
पहिलै पूत पिछे भई माई, चेला कै गुर लागै पाई।
जल की मछरी तरवरि ब्याई, कूंता कौ लै गई बिलाई।
बैललि डारि गौंनि थरि आई, घोंरै चढ़ि भैंस चरावन जाई।
तलि करि साखा उपरि करि मूल, बहुत भाँति जड़ लागे फूल।
कहै कबीर या पद कौं बूझे, ताकौं तीनिउँ त्रिभुवन सूझै।।

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

(ग) माखन खात हँसत किलकत हरि,

पकरि स्वच्छ घट देख्यौ

निज प्रतिबिम्ब निरखि रिस मानत,

जानत आन परेख्यौ

मन मैं माष करत, कछु बोलत, नंद बाबा पै आयौ।

वा घट मैं काहू कैं लरिका, मेरौ माखन खायौ।।

(घ) अति सूधों सनेह को मारग है

जहाँ नेकु सयानप बांक नहीं।

तहाँ साँचे चलें तजि आपनपौ

झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।

घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ

यहाँ एक तें दूसरी आँक नहीं।

तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ कहौ

मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।

2. 'पृथ्वीराज रासो' नाटक के काव्य-रूप प्रकाश डालिए। 10

3. परवर्ती काव्यधारा में विद्यापति के प्रभाव का वर्णन कीजिए। 10

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

4. आज के संदर्भ में कबीर के अवदान पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। 10

5. सूर की काव्य–भाषा का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 10

6. मीराँ की विरह–भावना पर प्रकाश डालिए। 10

7. तुलसी के काव्य के आधार पर तत्कालीन समाज का चित्रण कीजिए। 10

8. पद्माकर के श्रृंगार वर्णन की विशेषताओं को सोदाहरण रेखांकित कीजिए। 10

× × × × ×

Downloaded from www.IGNOUBABA.com